B.A. Part-2 (Hons)

INDIAN POLITICAL SYSTEM (Paper-3)

Topic: - Pressure Group or Interest Group

दबाव समूह आधुनिक प्रजातंत्र का अभिन्न अंग है। ये अमेरिकी राजनीतिक
व्यवस्था की देन है परन्तु आज प्रजातांत्रिक देशो की राजनीति में इन
दबाव समूहों का इतना महत्व है कि एस.इ. फाइनर ने इन्हें अज्ञात
साम्राज्य की संज्ञा दी है। मेकीन ने इन्हें दिखायी देने वाली सरकार
तथा सैलिन इसे अनौपचारिक सरकार कहते हैं। विभिन्न विचारक इसके
लिए अलग-अलग नामों का प्रयोग करते हैं। जबकि आंमडकी कौविज,
हिचनर, गैरीली, हवौल्ड जैसे विचारक इसे हित समूह कहना पसन्द
करते हैं। वहीं हैंडी अवसटीन, वी.ओ.के. धूनियर, पिनाक और स्मिथ
इसके लिए 'दबाव समूह' शब्द का प्रयोग करते हैं। दबाव समूहों
की सशक्तता को देखते हुए शुम्पीटर ने इन्हें वर्तमान तांत्रिक व्यवस्था
में गुमनाम साम्राज्य का शासक कहा है। एलन बाल ने
'प्रभावक गुट' तथा लिन पालमर ने 'संगठित समूह' शब्द का प्रयोग
किया है।

अर्थ एवं परिभाषा

सरल अर्थो में समूह का आशय व्यक्तियों के संगठन से है। परन्तु समूह
सिद्धान्त के सन्दर्भ में इसका भिन्न अर्थ है। आर्थर बेंटले के अनुसार
जिसे इस सिद्धान्त का निर्माता माना जाता है, "समूह का अर्थ
है समाज के लोगों का एक भाग जिन्हें लोगों के अन्य समूहों से
कटे हुए भौतिक पिण्ड के रूप में नहीं बल्कि गतिविधि के एक पिण्ड
के रूप में माना जाता है और जो इसमें भाग लेते हैं। उन्हें
उसी प्रकार की अनेक अन्य समूहों सम्बन्धी गतिविधियों में भागीदारी
से वंचित नहीं करता।

दबाव समूह की परिभाषायें निम्न हैं-

1. माइनर वीनर के अनुसार "हित या दबाव समूहों से हमारा तात्पर्य शासन
के ढाँचे के बाहर स्वैच्छिक रूप से संगठित ऐसे समूहों से होता है
जो सरकार के संगठन से बाहर रहकर प्रशासनिक अधिकारियों की
नियुक्ति सरकार की नीति, इसके प्रशासन और निर्णय को प्रभावित
करने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं।"

2. एच. जेगलर के अनुसार " दबाव समूह ऐसा संगठित समूह है जो अपने
सदस्यों को सरकारी पदों पर बिठाए बिना सरकारी निर्णय को प्रभावित
करने की इच्छा रखते हैं।"

दबाव समूह की विशेषताएं:

1. सीमित उद्देश्य
2. सीमित और परस्पर व्यापी सदस्यता
3. औपचारिक एवं अनौपचारिक रूप से संगठित
4. संवैधानिक और असंवैधानिक साधनों का प्रयोग
5. शासन में अप्रत्यक्ष भूमिका
6. अनिश्चित कार्यक्रम
7. व्यापक प्रकृति

दबाव समूह और हित समूह में अन्तर:

1. हित समूह अनुनयी साधनों का प्रयोग करते हैं, जबकि दबाव समूह दबाव की तकनीक का प्रयोग करते हैं।
2. हित समूह, सामाजिक संरचनाओं व प्रक्रियाओं को अपने प्रभाव का लक्ष्य बनाते हैं, जबकि दबाव समूह राजनीतिक प्रक्रिया को।
3. हित समूह विराजनीतिक कृत समूह होते हैं। यह राजनीति से प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं रखते हैं जबकि दबाव समूह राजनीतिकृत होते हैं।

दबाव समूह और लॉबी

(1) लॉबी का कार्यक्षेत्र विधायकों को प्रभावित करना है, दबाव समूह सम्पूर्ण राजनीतिक व्यवस्था की संरचनाओं को प्रभावित करते हैं।

(2) लॉबी का केन्द्र विधायकों के मतदान आचरण को प्रभावित करना है, दबाव समूह शासन की प्रत्येक संस्था को प्रभावित करते हैं।

दबाव समूह और राजनीतिक दल:-

(1) दबाव समूह किसी एक अथवा कुछ हितों की पूर्ति का उद्देश्य रखते हैं। राजनीतिक दलों का उद्देश्य सम्पूर्ण समाज का हित है।

(2) दबाव समूह का कार्यक्षेत्र विशिष्ट व संकीर्ण होता है वहीं राजनीतिक दलों का स्वरूप बहुरूपी और विस्तृत होता है।

(3) दबाव समूहों की सदस्यता अनन्य नहीं होती, दलों की अनन्य होती है।

(4) दबाव समूह स्वयं राजनीतिक प्रकृति का भाग नहीं बनते, दल राजनीतिक प्रक्रिया पर अधिकार प्राप्त करने का प्रयास करते हैं।

(5) दबाव समूह दलों की तरह निर्वाचन के लिए उम्मीदवार खड़ा नहीं करते हैं।

(6) राजनीतिक दल राष्ट्रव्यापी संगठन रखते हैं, दबाव समूह के ऐसे संगठन कम होते हैं।

दबाव समूहों के प्रकार :-

प्रायः दुनिया भर के देशों में चार प्रकार के दबाव समूह पाये जाते हैं।

(क) ट्रेड यूनियन, व्यवसायी संगठन, कर्मचारी संघ आदि विशेष हितों वाले दबाव समूह।

(ख) आर.एस.एस. और आनन्द मार्ग जैसे संगठित समूह।

(ग) जातिवाद तथा क्षेत्रवाद के आधार पर जाति समूह जैसे भारत में अनुसूचित जाति संघ।

(घ) गाँधीवादी सिद्धान्तों पर आधारित दबाव समूह जैसे - गाँधियन क्लब आदि।

दबाव समूहों का वर्गीकरण

पोटर ने दबाव समूहों को दो भागों में बाँटा है -

1. सेक्शनल :- जब कोई दबाव समूह लम्बे समय तक कार्य करने की प्रेरणा से संगठित होता है उसे चिरकालीन या सेक्शनल दबाव समूह कहते हैं।
2. कॉज :- यदि कोई दबाव समूह थोड़े समय या एक ही हित की रक्षा के लिए संगठित होता है तो उसे 'कॉज' समूह कहते हैं।

* ब्लोण्डेल ने दबाव समूह का वर्गीकरण उसके निर्माण के प्रेरक तत्वों के आधार पर किया है। उनके अनुसार दबाव समूह को दो भागों में बाँटा जा सकता है। उन दोनों प्रकारों को पुनः दो-दो भागों में बाँटा गया है, जो निम्न है -

* आमण्ड ने दबाव समूह को चार भागों में बाँटा है -

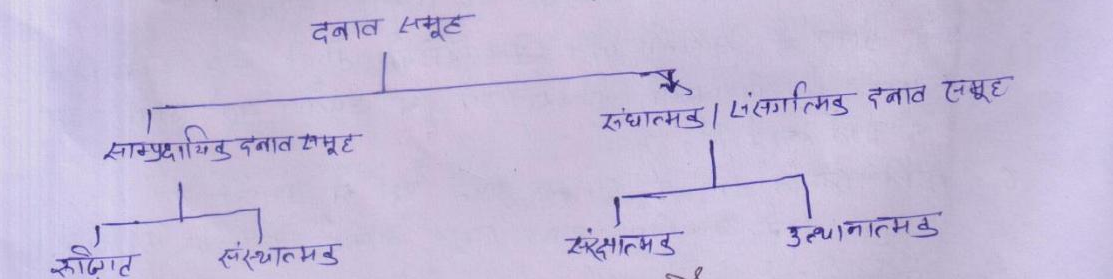

(1) संस्थात्मक (Institutional) :- यह आमण्ड द्वारा आविष्कृत एक नया वर्ग है, इसमें राज्य के विभागों जैसे - विधायिका, कार्यपालिका, नौकरशाही तथा न्यायपालिका को दबाव समूहों की श्रेणी में रखा गया है।

(2) सामुदायिक (Associational) दबाव समूह :- ये औपचारिक ढंग से संगठित होते हैं, इसमें व्यापारी, मजदूरों, किसानों, व्यवसायियों के संगठन का उल्लेख किया जा सकता है, जैसे ट्रेड यूनियन, विद्यार्थी संघ, व्यावसायिक संघ, शिक्षक संघ, कृषक संघ इसी में आते हैं।

3. असमुदायात्मक (Non-Associational) दबाव समूह :-
ये अनौपचारिक ढंग से संगठित तथा जातीय, वर्गीय और धार्मिक आधारों पर बनाये जाते हैं। विशेषकर ये समूह विश्व के पिछड़े राज्यों में देखे जाते हैं।

4. चमत्कारी (Anomic) दबाव समूह
इस वर्ग में सभी संगठन सम्मिलित किए जा सकते हैं। जिनके व्यवहार के विषय में पूर्वानुमान करना संभव नहीं है, ऐसे संगठन प्रायः संयोगवश आचरण करते हैं तथा हिंसात्मक और आतंकवादी गतिविधियों में लिप्त रहते हैं।
भीड़, प्रदर्शन, जुलूस, दंगे, धरना, हड़ताल, उग्रवादी संघ, छात्र व युवा संगठन आदि इसके उदाहरण हैं।

दबाव समूहों की कार्य प्रणाली
अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए दबाव समूह विभिन्न युक्तियाँ और तरीके अपनाते हैं।

1. अनुनय
2. सौदेबाजी
3. सीधी कार्यवाही
4. लॉबीज - जिनका सामान्य अर्थ विधानमण्डल के सदस्यों को प्रभावित कर अपने हित में कानूनों का निर्माण करवाना।
5. प्रचार प्रसार के साधनों जैसे-प्रेस, रेडियो, टी.वी. और सार्वजनिक संबंधों में विशेषज्ञों की सेवाओं का उपयोग कर अपने हित की पूर्ति करते हैं।
6. नीति निर्माताओं के समक्ष अपने पक्ष को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने के लिए दबाव समूह आंकड़े प्रकाशित कराते हैं।
7. गोष्ठियों के आयोजन के द्वारा अपने मत में प्रभावित करते हैं।
8. अपने हितों की पूर्ति के लिए दबाव समूह रिश्वत, भेंट तथा अन्य साधनों का प्रयोग करते हैं।
9. दबाव समूह न्यायालय में याचिका प्रस्तुत कर अपने पक्ष में निर्णय करवाने का प्रयास करते हैं।
10. दबाव समूह ~~न्यायालय में याचिका~~ ऐसे व्यक्तियों को चुनाव में दलीय प्रत्याशी मनोनीत करवाने में मदद देते हैं जो आगे चलकर संसद में उनके हितों की अभिवृद्धि में सहायक हो।

* दबाव समूह की आलोचना निम्न आधारों पर की जाती है: जैसे ये अप्रजातांत्रिक हैं। संकीर्णता के प्रतीक हैं, सार्वजनिक हितों की उपेक्षा करते हैं, भ्रष्टाचार को बढ़ावा देते हैं तथा अन्तर्राष्ट्रीयता के मार्ग में बाधक हैं आदि।

दबाव समूह के कार्य, भूमिका एवं उपयोगिता

दबाव समूह के कार्यों की विवेचना उनकी ~~उपयोगिता~~ उपयोगिता तथा महत्व के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं:-

1. यह लोकतांत्रिक प्रक्रिया को अभिव्यक्ति प्रदान करने का साधन है।
2. दबाव समूह शासन की सूचना एकत्रित करने वाले संगठनों के रूप में कार्य करते हैं।
3. दबाव समूह सरकार की निरंकुशता को सीमित करते हैं।
4. दबाव समूह शासन और समाज में सन्तुलन स्थापित करते हैं।
5. व्यक्ति और सरकार के मध्य संचार साधन के रूप में कार्य करते हैं।
6. दबाव समूह विधान निर्माण में विधायकों की सहायता करते हैं, इनकी परामर्श और सहायता इतनी उपयोगी होती है कि आज इन्हें 'विधानमण्डल के पीछे विधानमण्डल' कहा जाने लगा है।
7. दबाव समूह क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व के पूरक का कार्य करते हैं।

आलोचनात्मक मूल्यांकन

दबाव समूहों की भूमिका एवं कार्य का मूल्यांकन करते समय इनके पक्ष में यह तर्क प्रस्तुत किया जाता है कि हितबद्ध समूहों ने अध्ययन की बहुत व्यापक धारा की ओर संकेत किया है तथा ऐसा करके उनने राजनीतिक विज्ञान के क्षेत्र को काफी विस्तृत बना दिया है।

* इसके अतिरिक्त असंख्य दबावकारी राजदलों के साथ मिलकर कार्य करते हैं तथा वे प्रजातांत्रिक व्यवस्था के संचालन को सफल बनाते हैं।
* अतः यह कहा जा सकता है कि प्रजातांत्रिक व्यवस्था यदि राजनीतिक दलों के बिना नहीं चल सकती तो राजनीतिक दल भी दबाव समूहों की सहायता के बिना नहीं चल सकते।
* परन्तु इस प्रकार की राजनीति के आलोचक अपने पक्ष में यह तर्क प्रस्तुत करते हैं कि दबाव समूह सदा वर्गीय एवं स्थानीय हितों के बोझ से दबे रहते हैं। अधिकांश मामलों में निजी भूमिका एवं स्वार्थपूर्ण विचारों के कारण 'सामान्य इच्छा' के विचार को तिलांजली दे दी जाती है।